

डिस्चार्ज होती आंतरिक ऊर्जा की पहचान

* ब्रह्मगुमाये शकुंतला, वहल (हरियाणा)

अनेक प्रकार की ऊर्जाओं का हम दैनिक जीवन में उपयोग करते हैं। उपयोग करने से ऊर्जा की मात्रा में कमी आती जाती है। फिर हमारा ध्यान उस ऊर्जा को पुनः भरने पर जाता है।

रोजमर्मा के जीवन का एक छोटा-सा उदाहरण ही हम लें। हम मोबाइल फोन प्रयोग करते हैं। इसका प्रयोग करते समय हम एक साथ चार प्रकार की ऊर्जा प्रयोग कर रहे होते हैं। पहली ऊर्जा है पैसे की ऊर्जा। बात पूरी होते ही मोबाइल की स्क्रीन पर आ जाता है कि आपने कितने पैसे खर्च किये हैं और अभी कितने बाकी हैं। यदि पैसे इतने कम हैं कि आपको एक कॉल और करनी पड़ी और आपकी बात बीच में ही रह जायेगी तो आप सब ज़रूरी कार्य छोड़कर भी उसे रिचार्ज कराने भागते हैं।

दूसरी ऊर्जा है उसकी बैटरी में, उसकी भी खपत हो रही है। वह भी यदि बहुत कम हो गई हो और बेशक हमारा सोने का समय हो गया हो, फिर भी हम उसे बिजली से जोड़कर रिचार्ज करते हैं ताकि किसी के साथ भी संवाद की प्रक्रिया बीच में न रह जाए।

तीसरी, मोबाइल प्रयोग करने वाले व्यक्ति की शारीरिक ऊर्जा की

खपत हो रही है। कर्मेन्द्रियों से बोलते हैं, सुनते हैं तो शरीर की शक्ति भी प्रयोग होती है। फिर शरीर भी रिचार्ज होना चाहता है। शरीर की चार्जिंग के लिए ऑक्सीजन, जल, भोजन और नींद जैसी आवश्यक चीज़ों की हम पूर्ति करते हैं।

चौथी ऊर्जा जो सबसे अधिक महत्वपूर्ण है और बाकी तीनों ऊर्जाओं का भी संचालन करने वाली है वह है – आन्तरिक ऊर्जा, मन की ऊर्जा, आत्मा की ऊर्जा। शरीर जिस ऊर्जा से चलता है उसका ही नाम “आत्मा” है। क्या हमें आत्मा को रिचार्ज कराने का ख्याल कभी आया? बाकी सभी साधन फिर भी सीमित समय के लिए प्रयोग में आते हैं लेकिन शरीर को चलाने वाली यह आत्मिक ऊर्जा तो ‘अहर्निशाम् सेवामहे’ वाली उकित के अनुसार कभी अपने कार्य से छुट्टी नहीं लेती। सब ऊर्जाओं का निर्माण, व्यवस्था व उपयोग करने वाली आत्मा को 24 घण्टे में एक बार तो क्या 24 सालों में भी चार्ज करने की आवश्यकता महसूस नहीं करते!! आप कहेंगे कि हमें तो इसको चार्ज कराने की

आवश्यकता का कोई संकेत ही नहीं मिलता है, फिर कैसे चार्ज कराने की

बात सोचें? आइये! जानें, वे कौन-से संकेत हैं, लक्षण हैं जिनसे पता चले कि मुझे तुरन्त आत्मिक रूप से रिचार्ज होने की आवश्यकता है।

शान्ति की कमी – दिन-प्रतिदिन मनुष्य के जीवन में शान्ति की कमी होती जा रही है। परिणामस्वरूप अशान्ति बढ़ रही है। बात-बात में झुंझलाहट, आवेश में आना, चिड़चिड़ापन, तुरन्त प्रतिक्रिया, हिंसात्मक विचार, हिंसा, रोना, रुठना, मूड ऑफ, आगजनी, जाम, हड़ताल, सरकारी व अपनी सम्पत्ति में तोड़-फोड़, अपना ही अंगभंग, आत्महत्या, बदले की भावना, आत्मघाती हमला, हिंसक उपकरणों की खोज व उनका निर्माण – ये सभी नकारात्मक भाव एवम् कर्म सिद्ध करते हैं कि शान्ति का स्तर खतरे के निशान से काफी नीचे चला गया है और स्वयं को तुरन्त शान्ति की शक्ति से रिचार्ज कराना आवश्यक है। जैसे शरीर में भी पानी या हवा का स्तर आवश्यकता से नीचे चला जाए तो उसकी भी निशानियाँ दिखाई देने लगती हैं और तुरन्त हम उस कमी को पूरा करते हैं।

वास्तव में इन नकारात्मक वृत्तियों का अपना कोई अस्तित्व नहीं है। ये

तो शान्ति रूपी ऊर्जा (प्रकाश) की अनुपस्थिति में पैदा हुए मच्छर-मक्खियाँ व कीटाणु मात्र हैं। इस तथ्य को न समझ पाने के कारण हिंसा व हिंसात्मक गतिविधियों पर रोक लगाने के लिए आज राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बड़ी भारी योजनाएँ बनाई जा रही हैं, कानून पास किये जा रहे हैं, राष्ट्र का कीमती धन, समय व शक्तियाँ निरर्थक बहाई जा रही हैं। यह तो ऐसे ही हुआ जैसे एक दीपक जलाने की बजाय अन्धेरे को बोरियों में भरकर बाहर फेंकने का निरर्थक प्रयास करना।

प्रिन्ट और इलैक्ट्रोनिक मीडिया में हत्या व आत्महत्या के ऐसे-ऐसे समाचार छपते हैं जिन्हें पढ़ा या देखकर बरबस ही हमारे मुख से निकल पड़ता है – बस! इतनी-सी बात पर!!..... आज हमारे क्रोध का स्तर खतरे के निशान से ऊपर चला गया है और फिर भी हम निश्चिन्त बैठे हैं।

सतरह वर्षीय पोते ने बाइक की मांग पूरी न होने पर दादी की हत्या की.... होमवर्क करा रही माँ ने फोर्टी लिखना न आने पर अपने ही 7 वर्षीय बच्चे को सब्जी वाला चाकू मारा..... शराब के लिए पैसे न देने पर बेटे ने माँ को ईंट मारी..... खरीदे गये सामान के पैसे मांगने पर ग्राहक ने दुकानदार को गोली मारी..... नकल करने से रोके जाने पर विद्यार्थी ने अध्यापक

को “देख लेने” की धमकी दी.... शादी का प्रस्ताव ठुकराने पर मनचले ने लड़की पर तेजाब फेंका..... इलाज के दौरान मृत्यु होने से रोगी के परिजनों ने अस्पताल में तोड़फोड़ व डाक्टर के साथ हाथापाई की.... यह उस सभ्य समाज की तस्वीर है जिसके लिए हम गर्व से कहते हैं कि हम तो विकास के रास्ते पर तेज़ी से अग्रसर हैं।

आपको कितने ही लोग ऐसे मिल जाएँगे जिन्हें मोबाइल पर बात करते समय क्रोध आया और मोबाइल ही फेंक कर तोड़ दिया जबकि जिस व्यक्ति पर गुस्सा आया है वह तो सैकड़ों किलोमीटर दूर है। गलती उसकी और नुकसान अपना कर रहे हैं। क्रोध बुद्धि को तेज़ी से डिस्चार्ज करता है – यह इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है।

प्रेम की कमी – परमात्मा प्रेम का सागर होने के कारण हम सब उसके बच्चे भी मास्टर प्रेम के सागर हैं लेकिन आत्मा की यह प्रेम की ऊर्जा भी दिन-प्रतिदिन घटती जा रही है जिससे समाज व व्यक्तिगत जीवन में कई निशानियाँ दिखाई दे रही हैं। सम्बन्धों में कटुता, स्वार्थ, धोखाधड़ी, सन्देह, टकराव, मनमुटाव, चापलूसी, टूटते परिवार, अनाथालयों, वेश्यालयों व वृद्धाश्रमों में बेतहाशा वृद्धि, बढ़ते मुकदमे, अस्थों-शस्त्रों का निर्माण, भ्रून

हत्या, रिश्वत, मिलावट, भ्रष्टाचार के विभिन्न रूप आदि प्रेम की कमी से उपजी समस्याएँ हैं। जिस परिवार या समाज में प्रेम की भरपूरता होती है वहाँ इनके पैदा होने के लिए उपयुक्त वातावरण नहीं मिलता। कहते हैं, प्रेम की कमी वाले परिवार में तो लक्ष्मी के भी पैर नहीं पड़ते, वह भी पलायन कर जाती है।

आज के समय की एक गम्भीर समस्या – प्रेमी जोड़ों द्वारा आत्महत्या करना। यह भी सच्चे प्रेम की कमी से उपजी समस्या है। प्रेम किसी से भी हो, पिता, पुत्र, प्रेमी, पति, पुत्री, पत्नी, प्रेयसी, परमात्मा, पैसा, पढ़ाई, प्रकृति, पशु-पक्षी – जहाँ सच्चा प्रेम है वहाँ सहन तो करना ही पड़ता है। जहाँ यथार्थ प्रेम की कमी होती है वहाँ सहन करने की भावना में कमी आ जाती है, जो हिंसा को जन्म देती है। जब समाचारों में सुनते हैं कि 13-14 वर्ष की किशोरी ने प्रेम में असफल होने पर प्रेमी संग आत्महत्या कर ली तो एक प्रश्न ज़ेहन में उभरता है कि इस उमर की सुकोमल कुमारियाँ जहाँ अन्धेरे से, छिपकली या काकोच से इतनी डरती हैं तो उनमें स्वयं को आग लगाने या जहर खाने या कुएँ में गिरने जैसी भयानक घटनाओं को अन्जाम देने की शक्ति कहाँ से आ जाती है? जाहिर है, प्रेम में शक्ति तो होती ही है लेकिन आज उस प्रेम को सकारात्मक

ज्ञानामृत

दिशा नहीं मिल रही है इसलिए
अनेकानेक मूल्यवान जिन्दगियाँ
बर्बाद हो रही हैं।

कुछ समय पहले अखबार में एक समाचार छपा था कि विदेश में एक नन्हे बच्चे को डाक्टर बहुत प्रयासों के बाद भी बचा नहीं पाए और उसकी माँ को मृत शरीर ले जाने को कहा गया। पर माँ ने जैसे ही बच्चे की मृत देह को गोदी में उठाया, माँ के ममता भरे स्पर्श ने जादू किया और बच्चा गोद में जाते ही जीवित हो गया। इस घटना से डाक्टरों ने स्वीकार किया कि माँ का स्पर्श बच्चे के लिए सबसे बड़ी ही लिंग पावर है।

सच्चे प्रेम में मृत व्यक्ति को भी जीवित कर देने की क्षमता है लेकिन आज उल्टा हो रहा है। प्रेम के नाम पर मरना और मारना – इसी को ही सच्चा प्रेम मान लिया गया है। प्रेम की कमी का गिरता हुआ ग्राफ कहाँ जाकर ठहरेगा, इसकी कल्पना मात्र से ही हर एक की रूह काँप जाती है। इसलिए आत्मा को सच्चे आत्मिक प्रेम की ऊर्जा से तुरन्त रिचार्ज करने की आवश्यकता है। इसमें देरी दुर्घटनाओं को जन्म दे रही है।

पवित्रता की कमी – जैसे पानी की कमी से शरीर व संसार में हा-हाकार मच जाता है वैसे ही आज संसार में पवित्रता की कमी से हा-हाकार मचा हुआ है। अपवित्रता की अग्नि सारे

मानव समाज को झुलसा रही है। पवित्रता वो ऐसे अभूतपूर्व संकटकालीन समय की आज तक किसी ने भी कल्पना नहीं की थी। ‘विषय वैतरणी नदी’ आज के समय में जैसे बह रही है और उसमें समाज के सुशिक्षित, ऊँच पदासीन, बुद्धिजीवी और तथाकथित धर्म के ठेकेदार जिस तरह गोते मार रहे हैं, यह तो किसी ने भी नहीं सोचा होगा!!

महाभारत के सीरियल में एक द्रौपदी का चीरहरण और रामायण के सीरियल में एक सीता हारण का दृश्य पर्दे पर देख कर आँसू बहाने वालों ने तनिक भी सोचा न होगा कि एक दिन हर मुहल्ले, हर गली में, नहीं-नहीं हर घर में ऐसी घटनाओं का जीवन्त (Live) प्रसारण देखेंगे। पवित्रता की कमी से उपजे इस काम के दावानल को और अधिक भड़काने में इन्टरनेट, फिल्में, प्रिन्ट और इलैक्ट्रोनिक मीडिया भी धी का काम कर रहे हैं। आज कामुक वृत्ति वालों के लिए कोई भी, किसी भी उम्र और रिश्ते की नारी मात्र मांस का एक लोथड़ा है। जैसे कुत्ते को तो हड्डी चाहिए चबाने के लिए चाहे वह मृत या जीवित किसी भी प्राणी की हो, वैसे ही आज मानव पशुओं से भी बदतर हो गया है।

राजयोग के अभ्यास से अपने में शान्ति, प्रेम और पवित्रता की शक्ति

भरना – यह कार्य कोई ‘टाइम पास मूंगफली’ नहीं है जो जब फुरसत मिलेगी तब करेंगे। मनुष्य वर्तमान और भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए धनार्जन या विद्यार्जन जवानी में ही करता है, इसे बुढ़ापे के लिए नहीं छोड़ता। तो फिर राजयोग के अभ्यास से अपने को शान्ति, प्रेम और पवित्रता आदि सदगुणों से रिचार्ज करने के अति महत्वपूर्ण कार्य के लिए बुढ़ापे का इन्तज़ार क्यों? हाँ! इसके लिए इन्तज़ार वे लोग कर सकते हैं जिन्हें एक तो यह पक्का हो कि वे बुढ़ापे तक जीयेंगे ही और दूसरा यह गारंटी भी मिली हो कि बुढ़ापे में भी वे कार्य करने में उतने ही सक्षम भी रहेंगे।

यह फैसला तो स्वयं को करना होगा कि आत्मिक रूप से शान्ति की शक्ति से चार्ज करना है तो उसके लिए उपयुक्त समय या आयु कौनसी है? यदि हम ‘‘फुरसत’’ का इन्तज़ार करते हैं तो फुरसत के पल तो अस्पताल, जेल या फिर वृद्धाश्रम में ही मिलते हैं। आज समग्र विश्व के सामने शक्ति (आत्मिक बल और ईश्वरीय बल) के भयंकर अकाल की स्थिति प्रकट हुई है। इसीलिए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय ने इस वर्ष का विषय रखा है, ‘परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन का समय’। ♦